Shodh Sari-An International Multidisciplinary Journal

@2025 International Council for Education Research and Training
2025, Vol. 04, Issue 01, 316-327
ISSN: 2959-1376
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7796

नागरिकों में पर्यावरणीय चेतना के सम्बर्द्धन में संगीत की भूमिका

सिंह, भगत
मान्यवर कांशीराम गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज गाज़ियाबाद

सार

संगीत एक विश्व भाषा है जिसमें स्वर व लय के माध्यम से प्राणिमात्र को प्रभावित करने की क्षमता है। भारतीय संगीत में स्वभाव से ही सूक्ष्म मधुर ध्वनियों का संकलन है। भारतीय संगीत में लालित्य अंग है जो प्रकृति की सुकुमारता को व्यक्त करता है। श्रुति युक्त संगीत की ध्वनियाँ मानव मात्र के ह्रदय में सूक्ष्म भावों का सञ्चार करती हैं जो मनुष्य को प्रकृति के प्रति सम्वेदनशील बनाते हैं। संगीत के द्वारा हम प्राकृतिक आपदाओं, पेड़ों और जलवायु परिवर्तन को लेकर संवाद प्रारंभ कर सकते हैं और ऐसी चेतना पैदा कर सकते हैं जो लोगों को संगठित करके उन्हें प्राकृतिक संघर्षों को देखने, समझने और निपटने के लिए प्रेरित करती है। संगीत हर वर्ग के लोगों को आकर्षित करता है। बालक, युवा तथा वृद्ध सभी को आसान तरीके से प्रकृति तथा पर्यावरण के प्रति जागरूकता का संदेश पहुंचाने की क्षमता संगीत में है। हमारे गली मुहल्ले में प्रतिदिन नगरपालिका की गाड़ी में प्रातः काल बजने वाला गीत ‘ स्वच्छ भारत का इरादा कर लिया हमने ‘ घरों में स्वच्छता तथा कूड़ा उठाने की प्रेरणा देता है तथा इस गीत के माध्यम से लोगों को स्वच्छ भारत मिशन में सामूहिक योगदान का अवसर मिला है। भारतीय संगीत को नादयोग भी कहा गया है जो व्यक्ति को समस्त प्रकृति के प्रति कृतज्ञ तथा उसके प्रति प्रेम का सञ्चार करता है। संगीत के स्वर शब्द, लय व ताल के साथ गतिमान होकर हमारे ह्रदय को छूते हैं तथा प्रेरणादायक पंक्तियां आसानी से हमें याद हो जाती हैं। प्रकृति का ध्वनि तंत्र संगीत के स्वरों में विद्यमान होकर, जंगल, नदी, पहाड़, झरना, बर्षा, पत्तों की आवाज, चिड़ियों का कलरव आदि के रूप में हमें प्रकृति से जोड़ता है। वाद्य संगीत हमारे भीतर प्रकृति और पर्यावरण से जुड़ी भावनाओं को जगाता है, प्रकृति से जुड़ाव और प्रशंसा की भावना को बढ़ावा देता है। शांत और चिंतनशील ध्वनि परिदृश्य बनाने के लिए पक्षियों के गान, हवा और वर्षा की आवाज़ को शामिल किया जाता है। शास्त्रीय संगीत की राग रागिनियां सुनने वाले लोग शोर शराबा तथा कर्ण-कटु ध्वनियों को नापसंद करने लगते हैं। शास्त्रीय संगीत का विद्यार्थी सभी तेज आवाज व शोर मचाने वाले उपकरणों से दूर भागने लगता है। इससे वातावरण में ध्वनि प्रदूषण के निवारण की चेतना जागृत होती है। भारत के अनेक प्रांतों की लोकगाथाओं तथा लोकसाहित्य में प्रकृति प्रेम

@2025 International Council for Education Research and Training 2025, Vol. 04, Issue 01, 316-327
ISSN: 2959-1376 DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7796

के सहज व सुंदर चित्रण मिलते हैं जिन्हें संगीत के रूप में प्रस्तुत किया जाता है तथा हमारे मन में स्वस्थ प्राकृतिक परिवेश का निर्माण होता है। संगीत सभी उम्र और पृष्ठभूमि के लोगों तक पहुंच जाता है और उन्हें एक सूत्र में बांधता है। गीतों को गेयता प्रदान करके संगीत उन्हें आम आदमी तक पहुंचा देता है। शब्द-शक्ति के अतिरिक्त संगीत की नादशक्ति भी बहुत प्रभावशाली होती है।संगीत के वाद्य तथा स्वरलहरियां प्रकृति से तादात्म्य स्थापित करने में पूर्ण रूप से सक्षम हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत की बंदिशें भी भारतीय प्राकृतिक परिवेश के सौन्दर्य से पूर्ण हैं। ख्याल गायन में मध्य युग की अधिकांश रचनाओं में तत्कालीन भाषा में वन्य जीवन व मानवीय सम्बंधों के उल्लेख मिलते हैं। स्वरबद्ध रचनायें हमारे भीतर प्रकृति प्रेम का जागरण करती हैं। साथ ही लोगों को प्राकृतिक संरक्षण की शिक्षा भी मिलती है। वर्तमान युग में संगीत की शक्ति का प्रयोग करके कलाकार प्रथ्वी-वासियों को पर्यावरण संरक्षण की शिक्षा दे रहे हैं। भारतीय संगीत में राग बसंत, मेघ, हेमंत, हिंडोल, मल्हार आदि रागों का नामकरण ऋतुओं के आधार पर किया गया है। संगीत की बंदिशों में भी ऋतुओं का वर्णन है। सामूहिक गायन वादन समूह शक्ति का परिचायक है जो सभी को अनुशासन बद्ध होने तथा संकल्प लेने का एहसास कराता है। समूह गीतों के द्वारा मन में उत्साह जाग्रत होता है तथा गीतों की पंक्तियाँ हम गुनगुनाते रहते हैं जिससे अपने कर्तव्यों का बोध होता रहता है। संगीत के द्वारा कथावाचन के माध्यम से भी पर्यावरण के प्रति जागृति की जा सकती है। जनमानस में कथा कहानी का अधिक प्रभाव पड़ता है। प्रकृति की सुकुमारता संगीत के लालित्य में विद्यमान है। संगीत का आनंदमयी तत्व जो शास्त्रीय संगीत में अच्छी तरह से मुखर होता है, जनमानस में सहजता से प्रकृति - प्रेम की प्रेरणा देता है।

बीज शब्द : प्राकृतिक ध्वनियाँ, संगीतमय ध्वनियाँ, पर्यावरण, भारतीय संगीत, पर्यावरण चेतना।

प्रस्तावना

संगीत मानव सभ्यता का अभिन्न अंग है और विभिन्न संस्कृतियों में एक महत्वपूर्ण सामाजिक और सांस्कृतिक भूमिका निभाता है। संगीत के प्रभाव केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं हैं बल्कि पर्यावरण के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं 1 संगीत और प्रकृति का सम्बन्ध सहज ही है। स्वयं प्रकृति से संगीत की उत्पत्ति हुई है। प्रकृति में अनेक प्रकार की संगीतात्मक ध्वनि विद्यमान हैं जैसे - पक्षियों की चहचहाहट समुद्र की गर्जना , वायु की

@2025 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2025, Vol. 04, Issue 01, 316-327
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7796

संगीतमयी ध्वनि एवं जलप्रपात की ध्वनि। इन्हीं ध्वनियों को आधार बनाकर मानव ने संगीत की रचना की। सप्त स्वरों को इसी आधार पर प्राकृतिक स्वर कहा जाता है क्योंकि प्राकृतिक रूप से ये स्वर विद्यमान हैं। प्रकृति संगीत को प्रेरित करती है और संगीत प्रकृति को व्यक्त करता है। संगीत में प्रकृति के अनेक रंग, राग, और भाव दृष्टिगत होते हैं। भारतीय संगीत शास्त्र में तो ऋतुओं के आधार पर रागों की कल्पना की गई है। जैसे - वर्षा ऋतु में मल्हार राग, बसंत ऋतु में बसंत राग तथा वर्षा में मेघ मल्हार आदि का गायन किया जाता है। इस प्रकार संगीत प्रकृति को प्रभावित करता है और प्रकृति संगीत को प्रेरित करती है। आधुनिक मनुष्य और प्रकृति के बीच टूटे हुए संबंध को फिर से स्थापित करने के लिए पर्यावरण जागरूकता की आवश्यकता है। वैश्विक पर्यावरण जागरूकता हाल ही में उत्पन्न हुई है। लेकिन भारत में, इस जागरूकता का प्रमाण वैदिक काल में भी मिलता है। वैदिक दर्शन प्रकृति - प्रेम से ओतप्रोत है। भारतीय दर्शन में प्रकृति को ईश्वर की लीला कहा गया है। प्राचीन भारतीय विचार वनस्पतियों और जीवों की सुरक्षा, पंचमहाभूतों को दिए गए महत्व, पारिस्थितिकी के मौलिक सिद्धांतों, यज्ञ करने के महत्व और पर्यावरणीय मुद्दों पर प्रशासनिक नियम प्रदान करने पर प्रकाश डालते हैं । भारतीय संस्कृति को आरण्यक संस्कृति कहा जाता है। जो ग्रंथ गहन वनों में ऋषियों द्वारा लिखे गए थे उन्हें आरण्यक कहा गया। वेदों में मनुष्य को प्रथ्वी का पुत्र कहा गया है। माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तु॥"

अर्थ है- यह भूमि (पृथ्वी) हमारी माता है और हम सब इसके पुत्र हैं। 'पर्जन्य' अर्थात मेघ हमारे पिता हैं। और ये दोनों मिल कर हमारा 'पिपर्तु' अर्थात पालन करते हैं। (अथर्ववेद 12/1/12)

भारत के पर्यावरण संरक्षण सम्बंधी विचार आज के समय में अधिक प्रासंगिक हैं। आधुनिक युग में संगीत और प्रकृति का सम्बन्ध टूटता जा रहा है। आजकल की रचनाओं में प्रकृति-प्रेरित सौंदर्य का अभाव है। मानव ने प्रकृति से दूर होकर शहरों में निवास करना आरम्भ कर दिया है। इस कारण संगीत में भी प्रकृति के तत्त्वों का अभाव होता जा रहा है। कहा जाता है कि 'अकबर' के दरबारी गायक 'तानसेन' जब अपनी कला का प्रदर्शन करते थे तो पेड़-पौधे पशु पक्षी सब मस्त होकर झूमने लग जाते थे। तानसेन जब राग मल्हार गाते थे तब वर्षा होने लगती थी। भक्त कवि सूरदास जी ने तानसेन के वारे में कहा था

विधना यह जिय जानि कै सेसहिं दिये न कान ।

@2025 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2025, Vol. 04, Issue 01, 316-327
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7796

धरा मेरु सव डोलते, तानसेन की तान।।

इस प्रकार भारतीय संगीत द्वारा पर्यावरण पर प्रभाव को प्रदर्शित किया गया है । एक अन्य मत के अनुसार 'भरत मुनि' जी ने 'नाट्य शास्त्र' में संगीत के स्वरों की उत्पत्ति का माध्यम पशु पक्षियों को माना है । 'भरत मुनि'

के अनुसार मोर 'सा' (षड्ज) स्वर में, चातक ' रे' (ऋषभ), बकरा 'ग' (गन्धार), कौआ 'म' (मध्यम), कोयल 'प' (पंचम) मेंढक 'ध' (धैवत) तथा हाथी 'नि' (निषाद) स्वर में बोलते हैं । आज भी मनुष्य जब प्रकृति का संगीत सुनता है तो उसमें सहजता व आनंद की अनुभूति होती है। आज भी अनेक संगीतकार प्रकृति से प्रेरित होकर संगीत की रचना कर रहे हैं। संगीत के माध्यम से प्रकृति के प्रति जन समुदाय को जागरुक करना चाहिये तभी संगीत और प्रकृति इस प्रथ्वी को मनुष्य के रहने योग्य बना पायेंगे।

पर्यावरण का तात्पर्य

पर्यावरण शब्द का सन्धि विच्छेद करें तो हम देखते हैं कि यह शब्द 'परि+आवरण ' से बना है जिसका अर्थ है ऐसा आवरण जो हमें चारों ओर से घेरे हुए है। पांच तत्वों प्रथ्वी, जल, आकाश, अग्नि एवं वायु के द्वारा ही हमारा अस्तित्व है। इसके बिना जीवन असम्भव है। इसमें जड़ एवं चेतन सभी सम्मिलित हैं। प्रकृति के इन सभी घटकों में अन्तःसम्बंध है। जब भी किसी एक घटक में बिच्छेद होता है तो अन्य घटक भी प्रभावित हो जाते हैं। पर्यावरण में सन्तुलन होने पर ही यह जीवन चलता आ रहा है। हमारे ग्रंथों में प्रकृति और पर्यावरण के आलंकारिक वर्णन मिलते हैं।

लोकगीतों में पर्यावरणीय चेतना

लोकगीतों में अपनी सम्पूर्णता में मानवीय मूल्यों का समावेश होता है। मानवीय सम्बंधों की गरिमा एवं पर्यावरण की सुरक्षा लोकगीतों में रची बसी हुई है।

लोकगीत के माध्यम से समाज स्वयं को अभिव्यक्त करता आ रहा है। लोकसंगीतों में उल्लास और आनंद है। लोकगीतों की भाषा सहज स्फुरण की भाषा है जो मन को लुभाती है। पर्यावरण के मुद्दों के बारे में जागरूकता फैलाने का संगीत एक प्रभावी तरीका है। गीतों में पर्यावरण की समस्याओं को रचनात्मक रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है। प्रकृति सम्बन्धी गीत उनमें प्रकृति - प्रेम जगाते हैं। जब लोकगीतों की बात आती है तो प्रकृति और संगीत के बीच का यह संबंध और भी स्पष्ट हो जाता है। भारतीय लोक संगीत में प्रकृति के विभिन्न पहलुओं का समावेश होता है। किसान के जीवन, मौसमी बदलाव, नदियाँ, पर्वत, जंगल आदि पर

@2025 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2025, Vol. 04, Issue 01, 316-327
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7796

आधारित लोक गीत न केवल मनोरंजन प्रदान करते हैं, बल्कि इनसे लोगों में प्रकृति के प्रति प्रेम और संरक्षण की भावना भी जागृत होती है।

लोक गीत सदियों से हमारी संस्कृति, प्रकृति की सुंदरता, जीवन की सद्भावना और हमारे पर्यावरण की रक्षा की आवश्यकता का हिस्सा रहे हैं। ये गीत अक्सर प्राकृतिक दुनिया के प्रति प्रेम और सम्मान का संदेश देते हैं, श्रोताओं से प्रकृति और संगीत के उपहारों की सराहना करने और पर्यावरण के साथ सद्भाव में रहने का आग्रह करते हैं।

संगीत के शक्तिशाली माध्यम से, लोक गीत पर्यावरणीय चेतना और स्थिरता के महत्वपूर्ण विषयों को व्यक्त करते हैं। गीत अक्सर पहाड़ों, नदियों, जंगलों और वन्य जीवन की सुंदरता के बारे में बात करते हैं, जो भविष्य की पीढ़ियों के लिए इन बहुमूल्य संसाधनों को संरक्षित करने की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं। इन गानों को सुनने से लोगों का प्रकृति से गहरा नाता बनता है और वे पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कदम उठाने के लिए मजबूर होते हैं। इसके अलावा, लोक गीत जनता के बीच पर्यावरण संबंधी मुद्दों के बारे में जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे जटिल अवधारणाओं को सरल और आकर्षक तरीके से संप्रेषित करते हैं, जिससे लोगों के लिए प्रकृति के साथ सद्भाव में रहने के महत्व को समझना आसान हो जाता है। अपने संगीत में प्रकृति और संगीत के विषयों को शामिल करके, कलाकार प्रभावी ढंग से पर्यावरणीय जिम्मेदारी के संदेश दे सकते हैं और श्रोताओं को पर्यावरण संरक्षण की दिशा में सकारात्मक कार्रवाई करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। प्रकृति और संगीत के संदेशों को अपने गीतों और धुनों में अपनाकर, कलाकार समाज पर स्थायी प्रभाव डाल सकते हैं और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में वैश्विक आंदोलन में योगदान दे सकते हैं।

लोकगीतों में विवाह गीत, कृषि गीत, श्रमिक गीत, देवताओं के गीत, ऋतु गीत तथा संस्कार गीत आदि विविध प्रकार के गीत हैं। बारिश में सावन के महीने में उत्तर प्रदेश के अवधी में 'कजरी गायन ' की परंपरा रही है। इस गीत में एक बेटी अपने पिता को नीम का पेड़ काटने को मना करती है -

बाबा ! निबिया के पेड़ जिनि काटेउ, निबिया चिरैया बसेर,

बिटियन जिनि दुख देहु मोरे बाबा, बिटिया चिरैया की नांय।

सगरी चिरैया रे उड़ि जइहैं बाबा, रहि जइहैं निबिया अकेलि,

@2025 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2025, Vol. 04, Issue 01, 316-327
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7796

सगरी बिटियवे चली जइहैं सुसरे, रहि जइहैं मइया अकेलि।

भावार्थ:- बाबा ! नीम का पेड़ मत काटिए, क्योंकि इस पर चिड़ियों का

बसेरा है। बेटियां उन पक्षियों की तरह हैं जिनका आश्रय यह नीम का पेड़ है। बेटी और चिड़िया में अन्तर नहीं है। एक दिन यह चिड़िया उड़ जाएगी और नीम का पेड़ अकेला रह जाएगा। सारी बेटियां अपने ससुराल चली जाएंगी और मां अकेली रह जाएगी। राजस्थान में जैसलमेर के गांवों में निम्नलिखित पारंपरिक गीत गाया जाता है -

'बरसो बरसो ओ इन्दर राजा बाबोसा रे देस
थोड़ा तो बरसो ओ म्हारे सासरे।
हळियो हंके ओ बीरा म्हारा मगरा में जाय
भाइजो भाइजो ओ बीरा म्हारा लीलोड़ी जंवार
धोरा में भा'इजो ओ मीठो बाजरो'

भावार्थ - हे इन्द्र देव! आप मेरे पिता के देश (पीहर) में और मेरी ससुराल में भी बरसो। वर्षा होगी तो चारों ओर खुशहाली आएगी। खेतों में हल चलेंगे और मेरे भैया मगरे में खेत जोतने जाएंगे। मेरे भैया तुम हरी-हरी ज्वार बोना और रेतीले धोरों पर मीठे बाजरे के बीज डालना। ग्रामीण संस्कृति में कुआँ हमारे दैनंदिन जीवन का अभिन्न अंग रहा है- निम्नलिखित भोजपुरी लोकगीत में कुआँ खुदवाने का इस प्रकार वर्णन किया गया है -

"हमारो ससुर साहेब कुंइया खोनवले
डोरिया बरत दिनवा बीतल हो राम जी
पिया परदेसी नाहीं अइले हो रामजी....'

अर्थात् हमारे ससुरजी ने कुआँ खुदवाया! पानी भरते ज़िंदगी बीत रही है। मेरे परदेशी पति अब तक घर नहीं लौटे !

एक अन्य गीत में लोक के विचार से आम पुत्र का प्रतीक है

और किसी भी हरे भरे वृक्ष या उसकी डालियाँ को काटना वर्जित है-

"आम पुरत हवे, निमिया महतारी
बनवा के कर रछपाल, ए बिरिजबासी । "

अर्थात् हे ब्रजवासियो! आम को पुत्र मानो, नीम को माता समान जानो । वन की रक्षा करो।

महुआ के पेड़ से रस टपकता है और पूरा वन सुगंधि से मस्त हो उठता है-

"मधुर मधुर रस टपके, महुआ चुए आधी रात
बनवा भइल मतवारा, महुवा बिनन सखी जात।

"लोकगीतों में पर्यावरणीय शिक्षा के निम्नलिखित तथ्य मिलते हैं -

- लोकगीतों में पारिस्थितिकी तंत्र की समझ: लोकगीतों में जलवायु विनियमन, प्रदूषण शमन और जैव विविधता संरक्षण की मान्यता।

@2025 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2025, Vol. 04, Issue 01, 316-327
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7796

● लोकगीतों में संसाधनों के स्थायी उपयोग का संदेश: लोकगीतों में प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण प्रबंधन और संरक्षण की वकालत।

●लोकगीतों में पर्यावरणीय खतरों की चेतावनी: लोकगीतों में प्रदूषण, वनों की कटाई और जलवायु परिवर्तन जैसे खतरों के बारे में सावधान करना।

●लोकगीतों में सांस्कृतिक विरासत के रूप में पर्यावरणीय ज्ञान का संरक्षण: लोकगीतों के माध्यम से पारंपरिक पर्यावरणीय प्रथाओं और मान्यताओं का संरक्षण करना।

●लोकगीतों में सामुदायिक जुड़ाव और पर्यावरणीय जागरूकता: लोकगीतों में पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में सामुदायिक चर्चाओं और कार्रवाई को प्रेरित करना।

● पर्यावरणीय शिक्षा के रूप में: लोकगीतों का उपयोग स्कूलों और समुदायों में पर्यावरणीय जागरूकता बढ़ाने के लिए एक शैक्षिक उपकरण के रूप में।

बंगला लोकगीतों में नदी की बहती धाराओं और प्राकृतिक आपदाओं पर आधारित गीत समाज में चेतना फैलाते हैं। भूपेन हजारिका द्वारा गाया गया आसामी गीत -

विस्तार है अपार, प्रजा दोनों पार,
करे हाहाकार निःशब्द सदा ओ गंगा तुम
ओ गंगा बहती हो क्यूँ...का हमारे मन में सजीव चित्रण उत्पन्न करता है।

परिवेशीय संगीत और प्राकृतिक ध्वनियों में सम्बन्ध

परिवेशीय संगीत में प्राकृतिक परिदृश्यों की शांति और भव्यता को उजागर करने की एक अद्वितीय क्षमता होती है जो इसे प्रकृति की ध्वनियों के साथ गहराई से जोड़ती है। परिवेशीय संगीत और प्रकृति के बीच संबंधों को समझने से संगीत की प्राकृतिक दुनिया का प्रतिनिधित्व करने की इसकी क्षमता में अंतर्दृष्टि का विकास होता है।

1970 के दशक में परिवेशीय संगीत एक ऐसी शैली के रूप में उभरा जिसमें वायुमंडलीय ध्वनि परिदृश्य बनाने की कोशिश की गई जो श्रोताओं को सुखदायक और चिंतनशील ध्वनि के अनुभव से आच्छादित कर दे। ब्रायन एनो जैसे कलाकारों द्वारा रचित परिवेशीय संगीत का उद्देश्य पारंपरिक गीत संरचनाओं से दूर और इसके बजाय तरल और गहन ध्वनि वातावरण बनाने पर ध्यान केंद्रित करना था। परिवेशीय संगीत में प्रकृति के सार को पकड़ने की क्षमता है। कई परिवेशीय रचनाओं में पर्यावरणीय ध्वनियाँ शामिल होती हैं, जैसे हल्की बारिश, चहचहाते पक्षी, सरसराहट वाली पत्तियाँ और बहती

@2025 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2025, Vol. 04, Issue 01, 316-327
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7796

नदियाँ। इन प्राकृतिक ध्वनियों को अपने संगीत में एकीकृत करके, परिवेशीय कलाकार श्रोताओं को एक शांत प्राकृतिक दुनिया में ले जाते हैं। इन ध्वनियों के निर्माण में अनेक वाद्यों का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए हवा की आवाज़ को दर्शाने के लिए सिंथेसाइज़र नियोजित किया जा सकता है, जबकि ईथर स्वर एक विशाल परिदृश्य से घिरे होने की अनुभूति पैदा कर सकते हैं। ये तकनीकें परिवेशीय संगीत को प्रकृति में पाए जाने वाले जैविक लय और बनावट को प्रतिबिंबित करने में सक्षम बनाती हैं, जिससे जुड़ाव और शांति की गहरी भावना पैदा होती है।

भावनात्मक परिदृश्य बनाना

पर्यावरणीय ध्वनियाँ परिवेशीय संगीत के भावनात्मक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। फ़ील्ड रिकॉर्डिंग और प्राकृतिक ध्वनियों का उपयोग परिवेशीय रचनाओं को स्थान की भावना से भर देता है, जिससे श्रोताओं को विविध प्राकृतिक वातावरणों के माध्यम से श्रवण यात्रा शुरू करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। चाहे वह जंगल में पत्तियों की हल्की सरसराहट हो या किनारे से टकराती हुई लहरों की दूर की गूँज हो, ये पर्यावरणीय ध्वनियाँ परिवेशीय संगीत को एक भावनात्मक गहराई से भर देती हैं जो गहरे मानवीय स्तर पर गूंजती है। इसके अलावा, परिवेशीय संगीत में प्रकृति प्रेरित विषयों और कल्पना का समावेश, शांति और विस्मय की भावनाओं से लेकर आत्मनिरीक्षण और चिंतन तक, भावनाओं की एक श्रृंखला पैदा कर सकता है। प्राकृतिक दुनिया से प्रेरणा लेकर, परिवेशीय संगीत भावनात्मक स्थितियों के एक स्पेक्ट्रम को व्यक्त कर सकता है, जो प्रकृति की लगातार बदलती गतिशीलता को प्रतिबिंबित करता है।

प्रकृति प्रेरित संगीत की उपचार शक्ति

परिवेश संगीत और प्रकृति के बीच संबंध कलात्मक अभिव्यक्ति से परे है, जिसमें प्रकृति प्रेरित संगीत के चिकित्सीय और उपचार गुण शामिल हैं। अनुसंधान से पता चला है कि प्राकृतिक ध्वनियों को शामिल करने वाला परिवेशीय संगीत सुनने से शांत और तनाव कम करने वाला प्रभाव होता है, जो प्राकृतिक परिवेश में खुद को डुबोने के पुनर्स्थापनात्मक लाभों के समान है। पर्यावरणीय ध्वनि परिदृश्यों में आधुनिक जीवन की हलचल से राहत प्रदान करते हुए विश्राम और सचेतनता की स्थिति पैदा करने की क्षमता है। इस तरह, परिवेशीय संगीत एक ध्वनि अभयारण्य के रूप में कार्य करता है जो व्यक्तियों को प्रकृति के सुखदायक प्रभाव के

@2025 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2025, Vol. 04, Issue 01, 316-327
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7796

साथ फिर से जुड़ने की अनुमति देता है तथा यह सांत्वना और कायाकल्प का स्रोत प्रदान करता है।

शास्त्रीय संगीत की बंदिशों में प्रकृति - प्रेम व संरक्षण के तत्व - भारतीय शास्त्रीय संगीत केवल सुर और ताल का समन्वय नहीं है, बल्कि यह भावनाओं और संवेदनाओं की गहराई को भी दर्शाता है। इनमें से एक महत्वपूर्ण तत्व है प्रकृति प्रेम। शास्त्रीय संगीत की अधिकांश बंदिशों में प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन मिलता है । रागों में प्रकृति के विभिन्न पहलुओं को व्यक्त किया जाता है, जैसे कि मौसम, उसके परिवर्तन और प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद। उदाहरण के लिए, राग मल्हार बरसात के मौसम की उल्लास और ठंडक को व्यक्त करता है, जबकि राग बसंत वसंत ऋतु की खुशियों को उजागर करता है। इन रचनाओं में न केवल संगीत का आनंद होता है, बल्कि यह हमें प्रकृति के प्रति प्रेम उत्पन्न करती हैं।

शास्त्रीय संगीत की यह विशेषता है कि वह हमें प्रकृति का सम्मान और उसकी सुंदरता का अनुभव सिखाता है। शास्त्रीय संगीत में प्रकृति प्रेम एक गहरा और अभिन्न हिस्सा है, जो न केवल संगीत को समृद्ध बनाता है, बल्कि हमें जीवन के अनमोल तत्वों को पहचानने और सराहने की प्रेरणा भी देता है। शास्त्रीय संगीत की बंदिशों में प्रकृति प्रेम का महत्वपूर्ण स्थान है। संगीत में प्रकृति के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत किया जाता है, जैसे:

1. ऋतुओं का वर्णन: बंदिशों में वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद और हेमंत जैसी ऋतुओं का सुंदर वर्णन किया जाता है।

2. प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण: नदियों, पहाड़ों, वनों, पक्षियों और अन्य प्राकृतिक तत्वों का सुंदर चित्रण बंदिशों में देखा जा सकता है।

4. प्रकृति का प्रतीक: कई बंदिशों में प्रकृति के विभिन्न पहलुओं को प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

इस प्रकार शास्त्रीय संगीत की बंदिशों में प्रकृति प्रेम का गहरा प्रभाव देखा जा सकता है, जो इस परंपरा की समृद्धता और विविधता को दर्शाता है। शास्त्रीय संगीत की बंदिशों में प्रकृति प्रेम के कई उदाहरण मिलते हैं। कुछ प्रमुख उदाहरण इस प्रकार हैं:

1. राग मल्हार: यह वर्षा ऋतु का राग है। इसमें बारिश के आगमन और प्रकृति के हरे-भरे होने का वर्णन किया जाता है।

उदाहरण बंदिश: "गरजत बरसत सावन आयो रे"

@2025 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2025, Vol. 04, Issue 01, 316-327
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7796

2. राग बसंत: यह वसंत ऋतु का राग है, जिसमें प्रकृति के नवीनीकरण और फूलों के खिलने का वर्णन होता है।

उदाहरण बंदिश: "केतकी गुलाब जूही " व " छम छम नाचत आई बहार" आदि।

3. राग देस: इसमें ग्रामीण परिदृश्य और प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण किया जाता है।

उदाहरण बंदिश: "देखो सखि बरसन को आये बदरा"

4. राग मियां की मल्हार: यह भी वर्षा ऋतु का राग है, जिसमें बादलों, मोर और बारिश का वर्णन होता है।

उदाहरण बंदिश: "झुकि आई बदरिया सावन की"

5. राग मारवा: यह सूर्यास्त के समय का राग है, जिसमें शाम के समय प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों का वर्णन किया जाता है। हार थककर लौटते किसानों की मनोदशा का वर्णन मिलता है।

संगीत द्वारा पर्यावरणीय जागरूकता का प्रसार:

संगीत, अपनी शक्तिशाली भावनात्मक अपील के कारण, पर्यावरणीय मुद्दों को समझने और संवेदनशीलता पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पर्यावरणीय मुद्दों पर आधारित गीत और संगीत कार्यक्रम जनता में जागरूकता फैलाने और प्रकृति के प्रति संवेदनशील करने में सहायक हो सकते हैं। जैसे, बॉन जोवी का 'इट्स माय लाइफ' या माइकल जैक्सन का 'हियर इट इज' जैसे गीत पर्यावरण संरक्षण के संदेश को लोगों तक प्रभावी ढंग से पहुंचाते हैं। संगीत, व्यवहार परिवर्तन का उपकरण है। संगीत लोगों को प्रेरित करने और उनके व्यवहार में बदलाव लाने में सक्षम है। पर्यावरण-अनुकूल जीवन शैली को बढ़ावा देने वाले गीत, कार्यक्रम और अभियान, लोगों को अपशिष्ट कम करने, ऊर्जा संरक्षण, और स्थिरता के मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, ग्रीन डे का 'वाकी टॉकी' या रेड हॉट चिली पेपर्स का 'ग्लोबल वार्मिंग' जैसे गीत लोगों को जलवायु परिवर्तन के खतरों के बारे में जागरूक करने में महत्वपूर्ण हैं।

निष्कर्ष:

संगीत का पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान है। यह पर्यावरणीय जागरूकता बढ़ाने, लोगों के व्यवहार में बदलाव लाने और सतत विकास को बढ़ावा देने में सहायक है। संगीत की भावनात्मक शक्ति को समझकर हम इसे पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में लोगों को जागरूक करने और एक स्वच्छ और स्थायी ग्रह के लिए

@2025 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2025, Vol. 04, Issue 01, 316-327
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7796

काम करने के लिए प्रेरित करने के लिए उपयोग कर सकते हैं। हमें इस शक्तिशाली माध्यम का उपयोग करके पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना करने और संसाधनों के संरक्षण के लिए जागरूकता और कार्रवाई को बढ़ावा देने का प्रयास करना चाहिए।

"Earth Song" Michael Jackson का एक ऐसा गीत है जो प्रदूषण, जंगल की कटाई, और वन्यजीवों के विलुप्त होने जैसे मुद्दों को उजागर करता है। इस गीत का पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। "Heal the World" Michael Jackson का एक और लोकप्रिय गीत है जो शांति, प्रेम, और पर्यावरण की रक्षा का संदेश देता है। "Imagine" John Lennon का प्रसिद्ध गीत एक शांत और पर्यावरण के प्रति सचेत दुनिया की कल्पना करता है। यह गीत लोगों को अहिंसा और सद्भाव के लिए प्रेरित करता है। संगीत पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाने का एक अद्वितीय और प्रभावी माध्यम है। यह भावनात्मक जुड़ाव बनाता है, जागरूकता बढ़ाता है, कार्रवाई के लिए प्रेरित करता है, और समुदाय निर्माण करता है। संगीत के माध्यम से हम पर्यावरण के प्रति लोगों में बदलाव ला सकते हैं और हमारी धरती को बचाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

References

1. भोजपुरी लोकगीतों में पर्यावरण. (n.d.). छोटे लाल गुप्ता. https://m.sahityakunj.net/entries/view/bhojpuri-lokgeeton-mein-paryaavaran

2. Agrawal, V. (2015). RELATIONSHIP BETWEEN RAGA RAGINI AND ENVIRONMENT. International Journal of Research - GRANTHAALAYAH, 3(9SE), 1–4. https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9se.2015.3261

3. गुप्ता, डॉ० किरण कुमारी, हिन्दी काव्य में प्रकृति चित्रण, श्रीवास्तव, डॉ० संगीता, संगीत का वनस्पतियों पर पड़ने वाला प्रभाव, संगीत पत्रिका,

4. सितम्बर, 2005

5. सिंहस., & यादवम. (2021). सनातन संस्कृति में पर्यावरणीय चेतना. Humanities and Development, 16(1–2), 109–113. https://doi.org/10.61410/had.v16i1-2.21

6. Parmar, A. (2015). ENVIRONMENT PROTECTION (THROUGH MUSIC). International Journal of Research - GRANTHAALAYAH, 3(9SE), 1–2.

@2025 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2025, Vol. 04, Issue 01, 316-327
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7796

https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9se.2015.3263

7. Avasthi, D. T. . D. (2020). Contribution of literature and music in the treatment of depression. SHREE VINAYAK PUBLICATION.

8. Gupta, P. (2021). ENVIRONMENTAL IMPACT OF MUSICAL SOUNDS. ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts, 2(2), 34–36. https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v2.i2.2021.30

9. Singh, N. (2019). संगीत और मानवीय आभामंडल. Swar Sindhu, 7(2), 10–14. https://doi.org/10.33913/ss.v07i02a02

10. Sharma, P. M. (2016). आरण्यक ग्रन्थों में संगीत. Swar Sindhu, 4(2), 7–10. https://doi.org/10.33913/ss.v04i02a01

11. Oyeniyi, G. A. (2024). EMOTIONAL SOUNDTRACK: INFLUENCE OF MUSIC COMPOSERS ON AUDIENCE EMOTION. *Shodh Sari-An International Multidisciplinary Journal*, *03*(01), 394–410. https://doi.org/10.59231/sari7678

12. Oyeniyi, R. M. (2024). POSITIVE EDUCATION: INCORPORATING POSITIVE PSYCHOLOGY INTO THE CLASSROOM FOR STUDENTS' ACADEMIC SUCCESS. *Shodh Sari-An International Multidisciplinary Journal*, *03*(01), 411–429. https://doi.org/10.59231/sari7679

13. Yadav, M. (2023). Rehabilitation through dance therapy. *Shodh Sari-An International Multidisciplinary Journal*, *02*(04), 60–72. https://doi.org/10.59231/sari7624

Received on Nov 19, 2024
Accepted on Dec 22, 2024
Published on Jan 01, 2025

नागरिकों में पर्यावरणीय चेतना के सम्बर्द्धन में संगीत की भूमिका © 2025 by भगत सिंह is licensed under CC BY-NC-ND 4.0